ये लाली है कौन

गीता मैय्या की लाडली लाली है- इस पुस्तक की 'मैं,' एक अल्हड़ किंतु संवेदनशील और जिज्ञासु किशोरी। सांसारिक सम्बन्ध के अनुसार लाली है लालिमा यानि मेरी बेटी।

1990-92 के काल में श्रीमद्भगवद्गीता पर मेरा स्वाध्याय और चिन्तन बड़े ही सघन रूप से चल रहा था। साथ ही 'श्रीमद्भगवद्गीता- एक गृहस्थ की दृष्टि में' के लेखन और प्रकाशन की प्रक्रिया भी। सद्गुरु और ईश्वर की अहैतुकी कृपा से ही ऐसी स्थिति को प्राप्त करना सम्भव हो पाता है कि गृहस्थी की समस्त शंकाओं और समस्याओं का समाधान सहजता से मिलता रहे। ये सभी अंकित होते जा रहे थे उस पुस्तक में।

उस समय लाली की उम्र थी पन्द्रह सोलह वर्ष। मम्मी के प्रत्येक कार्य में उसकी रुचि थी। उन दिनों हम मां-बेटी के वार्तालाप कभी कभी घंटों चलते। हमारे चारों ओर के समाज के असंख्य पात्र और उनकी भिन्न भिन्न परिस्थितियां तथा मानसिकताएं इन वार्तालाप में समाविष्ट होते चले जाते थे। उन्हीं दिनों मेरे पूज्य स्वामी अनुभवानन्द जी ने मुझे प्रेरणा दी थी कि मैं 'बातचीत' की शैली में भगवद्गीता के कुछ विचारों को प्रस्तुत करूं। यह उनके अनुग्रह का स्पर्श था जिसने मेरी लेखनी को जगा दिया। आधार रूप में हमारे वार्तालाप उपलब्ध थे ही।

अब स्वामीजी के 'मेरे कन्हैया' तथा अन्य पुस्तकों के संकलन और प्रकाशन के कार्य से गहन रूप से जुड़ी तो वर्षों पहले लिख कर रखे हुए इन लेखों की याद आ गई। लालिमा अब अमरीका में अपने परिवार में व्यस्त और मस्त है। एक बार उसने मेरे जन्म दिन पर अपने हाथों से बना कर एक कार्ड दिया था। मुझे लगा कि गीता मैय्या और उनकी बेटी की अन्तरंगता को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने के लिये इस कार्ड की तस्वीर बढिया रहेगी। क्यों न इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर यही तस्वीर छपवा कर उसे एक अनूठा उपहार दूं।

स्वामी जी से चर्चा की तो उन्होंने बडे प्रेम के साथ इस 'आइडिया' का अनुमोदन किया। 'ये लाली है कौन' शीर्षक से इन बातों को लिखने का मधुर सुझाव भी उन्हीं का है क्योंकि सच कहें तो 'ये लाली' उनकी 'अपनी लाली' है।

प्रस्तुत पुस्तक के हर लेख में लाली की जिज्ञासाओं की गूंज है और भगवद्गीता का शांत, सरस, किंतु झकझोर देने वाला संगीत जो वंशीवारे कन्हैया का अधरामृत है। इसके विभिन्न पात्रों में अपने को देखें, लाली बनें और गीता मैय्या की गोद की मौज लें।

7 अप्रैल 2003 **उषा गाड़ोदिया**